ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(6): 1262-1265
www.allresearchjournal.com
Received: 21-03-2017
Accepted: 23-05-2017

दीपक कुमार
रिसर्च स्कॉलर, राजनितिक शास्त्र, OPJS विश्वविद्यालय चूरु राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
दीपक कुमार
रिसर्च स्कॉलर, राजनितिक शास्त्र, OPJS विश्वविद्यालय चूरु राजस्थान, भारत

भारत और पाकिस्तान के 'पालिटिकल रिलेशंस की कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं पर विश्लेषणात्मक अध्ययन

दीपक कुमार

सारांश
आज से 60 साल से भी पहले अंग्रेजों ने हमारे सम्राज्य को ध्वस्त किया था। जिस की वजह से भारतीय उपमहाद्वीप का विभाजन हुआ था,तब से अब तक भारत और पाकिस्तान कट्टर विरोधी और तनावपूर्ण पड़ोसी देश है।जिसकी की जड़ें धर्म और इतिहास तक फैली हुई हैं, और यह तनाव लगातार खतरनाक हथियारों की तरफ बढ़ता जा रहा है। 1947 में ब्रिटेन से स्वतंत्रता मिलने के बाद भारत और पाकिस्तान में तीन बार युद्ध हो चुका है। तनावपूर्ण मुद्दों को सुधारने के नियमित रूप से बातचीत जारी है। अंतर्राष्ट्रीय चिंता लागतार बढ़ती जा रही है कि ऐसी तनावपूर्ण स्थिति दोनों देशों के बीच की शत्रुता क्षेत्रियता और उनमें एक बड़े टकराव को जन्म दे सकती है। प्रस्तुत शोध पत्र उन प्रमुख घटनाओं का विवरण प्रस्तुत करता है जिनके कारण भारत एवं पाकिस्तान के बीच संबंध खराब हुए हैं। इनमें पठानकोट हमला, मुंबई में ताज होटल पर पर आतंकवादी हमला, सर्जिकल स्ट्राइक आदि कुछ प्रमुख घटनाएँ हैं जिनका विवरण इस शोध पत्र में भारत पाकिस्तान सम्बन्धों के दृष्टिकोण से किया गया है।

मुख्य शब्दावली :- पठानकोट, मुंबई हमला, मीडिया, अभिनंदन, बलूचिस्तान

प्रस्तावना:
Hussain,E jaz (2019) [1] ने कहा तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने 1989 में पाकिस्तान का दौरा किया। अंततः 1990 के दशक में दोनों पक्ष अपने द्विपक्षीय संबंधों को सामान्य करने में विफल रहे। सुरक्षा को लेकर और अन्य कई कारणों के डर से 1999 में दोनों देशों का सीमावर्ती शहर कारगिल में एक बार फिर से युद्ध हुआ। इसके बाद जब जुलाई 2001 में आगरा के बहुप्रतीक्षित शिखर सम्मेलन में दोनों देशों में मजबूती बनाने के लियें एक साथ बैठकर बातचीत करने का अवसर भी दिया गया। बावजूद इसके आपस में गलतफहमी और अविश्वास बरकरार रहा। वर्तमान में इसकेे कई उदहारण देखने को मिलते रहे है। जैसे भारत और पाकिस्तान संबंध क्षेत्रिय संघर्ष (कशमीर,सर क्रीक),सुरक्षा चुनौतियां (आतंकवाद) उर्जा की कमी और संसाधन की कमी (पानी की कमी), रणनीतिक अनिश्रितता,(हथियारों की होड़) और भू- राजनीतिक रूप से (अफगानिस्तान में छद्मा युद्ध) दोनों राज्यों की प्रतिद्वंद्विता मानव विकास के पृष्ठ भूमि के समक्ष खाई का काम कर रही है। लगभग 25 से 30 प्रतिशत भारतीय पाकिस्तानी या 60 मिलियन लोग गरीबी रेखा से नीचे आते है। बहुप्रतीक्षित सिंधु जल संधि कशमीर संघर्ष को हल करने में विफल रही साथ ही समाधान के लिए धीरे धीरे प्रासंगिकता भी को चुके थे। उदहारण के लिए बंगाल के बेसिन में फरक्का बैराज, आपसी अविश्वास और गलतफहमियों और पारम्परिक प्रतिद्धंद्धिता के कारण क्षेत्रियता के अधिपत्य पर परस्पर विरोध के कारण 1970 में इनको परमाणु की ओर ले गया। पिछले कुछ दशकों से दक्षिण एशियाई देशों ने रणनीतिक अनिश्रितता के साथ ही जोड़ा है।

Flamenbaum,S.and Neville. M.(2011) [2] विभाजन के बाद हमेशा से ही भारत और पाकिस्तान के बीच शांति और क्षेत्रीय विवादों प्रतिस्पर्धात्मक बयानों द्वारा चुनौती भी दी गई।भारत और पाकिस्तान में आपसी दुश्मनी के चलते अपने अस्तित्व को बचाने के लिए कशमीर मुद्दे पर 1989 से अब तक तीन बार युद्ध हुआ। 1998 में भारत ने जब पाकिस्तान के लिए परमाणु हथियारों का परीक्षण किया तब आंतकवादी गतिविधियों में तेजी आई। परमाणु परीक्षणों से अतंराष्ट्रीय स्तर को बढ़ावा दिया। दोनों देशों पर अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंध भी लगाए गए।भारत और पाकिस्तान ने अंतरराष्ट्रीय दवाब को कम करने के लिए 21 फरवरी,1999 को दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों ने आपस में बात चीत करके 'लाहौर घोषणा' पर हस्ताक्षर किए और भारत पाकिस्तान के 'सभी मुद्दों कल हल करने के प्रयासों को तेज किया। भारतीय प्रधानमंत्री वाजपेई द्वारा शुरू की गई नई दिल्ली से लाहौर बस यात्रा के तीन महीनों के बाद

ही सब मुद्दों को भुलाकर पाकिस्तानी समर्थित घुसपैठियों ने कशमीर के कारगिल क्षेत्र में युद्ध की शुरुआत कर दी।

विद्यमान साहित्य की समीक्षा:

Naazer,M.A. (2018) [3] में कहा कि सार्क शिखर सम्मेलनों से दोनों देशों काफी सफल मिली है, क्योंकि इस सम्मेलन से भारत और पाकिस्तान के नेताओं को आमने-सामने आकर व्यक्तिगत और सामान्य रूप से बातचीत करने के बहुत से अवसर मिले है। दोनों देशों को अपनी द्विपक्षीय समस्याओं और राजनीतिक विवादों के साथ साथ विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग की संभावनाओं पर चर्चा करने में सक्षम बनाया।अब ये दोनों देश अनौपचारिक मामलों पर बातचीत करने में सक्षम थे; जैसे तनाव फैलाना; संकट का प्रबंधन; पुनर्जीवित या बातचीत की शुरुआत और समझौता करना। 'दक्षेस शिखर सम्मेलन' में भारत और पाकिस्तान के नेतृत्व के बीच हुई। इन बैठकों में कई समझौतों को पूरा करने में मदद मिली। जिसमें एक दूसरे की परमाणु सुविधाओं पर हमला न करना और साथ ही पूर्व (पंजाब) में सिख विद्रोह के पाकिस्तान द्वारा संदिग्ध मामलों में समर्थन की चिताओं पर ध्यान देना शामिल है। सियाचिन ग्लेशियर के मुद्दे पर बातचीत की, जिसमें 1989 और 1992 में एक समझौते का समापन हुआ,1987 में आपरेशन ब्रास्टैक्स के बाद द्विपक्षीय संबंधों का समीकरण, 1998 में परमाणु परीक्षण, 2001 में भारत में आतंकी हमले और 2008 में हुए शिखर सम्मेलन ने भी दोनों देशों के नेताओं को बातचीत करने के लिए ओर सक्षम बनाया। 1990, 1997, 2004, और 2011, में फिर से शांति प्रक्रिया शुरू करने का प्रयास किया। दोनो देशों की आर्थिक स्थिति को सुधारने और मजबूत करने के लिए लोगों से लोगों का मिलना शामिल है। मीडिया को चाहिए कि भारत और पाकिस्तान के संबंधों को मजबूत बनाने के लिए अनौपचारिक विवादों से हटकर औपचारिक रूप से बातचीत को दिखाने की व्यवस्था करनी चाहिए।

Lijaz,A.(2017) [5] ने बारे में कहा कि भारत और पाकिस्तान का दक्षिण एशिया से संबंध शांति और स्थिरता का केंद्र है। जबकि भारत के प्रधानमंत्री मोदी की सरकार से संबंध शत्रुतापूर्ण ही रहे है। पाकिस्तान के प्रयासों के बावजूद कश्मीर में मोदी की क्रूर नीतियों,चरम पंथी मानसिकता और पाकिस्तान के विरोधी रूख ने शांति से बातचीत शुरू होने की संभावनाओं को पटरी से फिर उतार दिया है। मोदी सरकार के कार्यकाल (2014 से अब तक) भारत और पाकिस्तान संबंधों का विश्लेषण यह है कि निकट भविष्य में द्विपक्षीय संबंधों में कोई सुधार आने की उम्मीद नही दिखाई देती। मोदी का पाकिस्तान के प्रति कठोर दृष्टिकोण कश्मीर में मुसलमानों के प्रति भेदवाद पूर्ण नीतियों और उनकी अतिवादी मानसिकता ने दोनों देशों के बीच विश्वास में कमी, असुरक्षा और गलतफहमियों को जोड़ा है। इस्लामाबाद का कहना है पाकिस्तान को अलग-थलग करने के प्रयासों के विपरित भारत को द्विपक्षीय,क्षेत्रीय शांति के लिए वार्ता के माध्यम से समस्या का समाधान निकालना चाहिए। चाहे वह अफगानिस्तान का मामला हो या भारत का, द्विपक्षीय संबंधों में सुधार लाने के लिए और एक संतुलित, शांतिपूर्ण वातावरण बनाने के लिए प्रधानमंत्री मोदी को पाकिस्तान के प्रति अपने कठोर और घृणित दृष्टिकोण को बदलना चाहिए।

Thankachan,K.and Thomas, P.E.(2019) [4] के अनुसार मिडिया के माध्यम से वास्तविकताओं को सामने ना लाकर वास्तविकता की सच्चाई से दूर रहकर घटनाओं को मनोरंजन से जोड़ कर समाचारों द्वारा प्रसारित किया जाता है। जनमत मिडिया में दिखाई गई घटनाओं के आधार पर निर्णय करते है। मिडिया अगर सत्य को सामने लाता है तो संघर्ष करने में प्रेरक का काम करता है। असत्यता को दिखा कर 'छवियों की संरचनात्मकता को असत्य' बना देता है।जैसा कि उरी हमले में देखने को मिला है। हालांकि डॉन ने शांति बनाए रखने के लिये अपनी रिपोर्ट में पहल की थी, फिर भी बहुत सारे मनोरंजन और हस्तक्षेपों के साथ उसे शून्य कर दिया गया, वास्तविक समय की घटनाओं में टकराव को जोड़कर समाचार को वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। दूसरी ओर, द हिंदू की कहानियों में उद्देश्य से अधिक तथ्य और आंकड़े थे,अस्तित्व और शांति को शामिल करने के कम प्रयासों ने शांति के प्रवर्तक के रूप में इसकी भूमिका की देखरेख की। पूर्ण वास्तविकता प्रदान करने के लिए इसका सही ढांचा बनाये जाने से ही खतरे की अक्षमता से दूर रहा था सकता है। ऐसे संदर्भों में संघर्ष की अवधारणा सच्चाई से बहुत दूर है। संघर्ष को समझना और उसे प्रस्तुत करना, समाधान की तलाश करना, संघर्ष के तख्ते के खतरे को दूर करने का एकमात्र समाधान मीडिया ही है। अगर मीडिया चाहे तो वो एक महत्वपूर्ण और सक्रिय भूमिका निभा सकता है।

Sinha,A.(2019) [6] ने तीन प्रमुख युद्धों और की सशसत्र संघर्षों के साथ- साथ सैन्य गतिरोध के बावजूद, शिमला शिखर सम्मेलन, आगरा शिखर सम्मेलन और लाहौर शिखर सम्मेलन जैसे संबंधों को सुधारने के कई सफल प्रयासो के बारे में चर्चा की है। दोनों देशों ने मिलकर एक दूसरे पर विश्वास बनाने के लिए कुछ काम किये उदहारण के लिए, 2003 का युद्ध विराम समझौता, और भारतीय प्रधानमंत्री मंत्री अटल बिहारी वाजपेई और परवेज़ मुशर्रफ़ ने दिल्ली-लाहौर बस सेवा का उद्घाटन किया था। हालांकि,2001 में भारत संसद पर हमला,2007 समझौता एक्सप्रेस बम विस्फोट और हाल ही में पुलवामा और बालाकोट की घटनाएं और भारतीय सर्जिकल स्ट्राइक में सब घटनायें दोनों देशों के बीच तनाव को बनाए रखने के लिए जिम्मेदार थे। भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के कार्यकाल के दौरान 2016 के पठानकोट हमले के बाद द्विपक्षीय चर्चा फिर से ठप्प हो गई। इसके अलावा, भारतीय प्रशासित कश्मीर में एक भारतीय सैन्य अड्डे पर हमले ने नियंत्रण रेखा (एलओसी) के पार दोनों ओर से तनाव और संघर्ष विराम का उल्लंघन किया और भारतीय सुरक्षा बलों पर उग्रवादी हमले के साथ एक सैन्य टकराव को जन्म दिया।

Khan, A. and Khan, A. (2020 [7] ने उद्धृत किया कि 14 फरवरी, 2019 को भारतीय प्रशासित कश्मीर (IAK) के पुलवामा जिले में सुरक्षाकर्मियों के काफिले को ले जा रहे वाहन पर हमलावरों ने आत्मघाती हमला किया गया, जिसके परिणामस्वरूप 40 भारतीय केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की मौत हो गई। भारत ने फिर से जैश-ए-मुहम्मद (JeM) को दोषी ठहराया और पाकिस्तान ने किसी भी तरह के अपने संबंधों से इनकार किया '(डॉन डॉट कॉम, 2019)। भारत ने पाकिस्तान में स्थित जैश-ए-मुहम्मद (JeM) के ठिकानों पर हमला करने की धमकी दी और जल्द ही पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के अंदर 26 फरवरी को बालाकोट इलाके में हवाई हमला कर दिया। भारत ने एक उग्रवादी संगठन को नष्ट करने और भारी नुकसान पहुंचाने का दावा किया। जीवन, जैश-ए-मुहम्मद (JeM) '(स्लेटर एंड कांस्टेबल, 2019) से संबंधित 300 सेनानियों की हत्या की पुष्टि की। हालांकि, Air पाकिस्तान ने इस दावे का खंडन करते हुए कहा कि भारतीय वायु सेना (IAF) के युद्धक विमानों को पाकिस्तानी इंटरसेप्टर द्वारा सामना किए जाने पर एक खाली पहाड़ी पर अपना पेलोड छोड़ने के लिए मजबूर किया गया था '। इस्लामाबाद ने भी उस क्षेत्र में किसी भी आतंकवादी शिविर के अस्तित्व से इनकार किया। अगले दिन, and भारतीय और पाकिस्तानी युद्धक विमानों ने कश्मीर और पाकिस्तान पर एक हवाई हमले में एक भारतीय विमान को नीचे गिरा दिया और

पाकिस्तान के प्रशासित कश्मीर इलाके में हमारे पायलट को पकड़ लिया। घंटों बाद, खून से सने IAF पायलट, विंग कमांडर अभिनंदन वर्धमान की वीडियो सोशल मीडिया पर दिखाई गई। यह इतिहास में पहली बार था कि दो परमाणु-सशस्त्र राज्यों ने एक-दूसरे के खिलाफ हवाई हमले किए है। जिसने भारत और पाकिस्तान को परमाणु युद्ध के कगार पर ला दिया। स्थिति इतनी अस्थिर थी कि यह जान बूझकर हाथ से निकल कर परमाणु सर्वनाश का कारण बन सकती थी। दोनों ओर अत्यधिक तनाव और युद्ध हिस्टीरिया था। हालाँकि पाकिस्तान ने घोषणा की कि पायलट को बिना किसी शर्त के शांति के इशारे पर रिहा किया जाएगा और अगले दिन, उसे वाहगा बॉर्डर पर भारतीय अधिकारियों को सौंप दिया गया।

Javaid, U and Kamal,M.(2013) [8] पाकिस्तान को अरब सागर के माध्यम से भारत के एक बड़े शहर मुंबई पहुंचने का एक आसान सा रास्ता मिल गया था। एक ओर से दूसरी ओर पहुंचना बड़ा ही सरल था। यह शहर विदेशी पर्यटकों और उच्च अधिकारियों का मुख्य केंद्र है।27 नवंबर 2008 में दक्षिण मुंबई में घातक सिलसिलेवार हमलों के कारण अराजकता की स्थिति फैल गई। जिसमें कई लोगों की जान चली गई और सैकड़ों लोग घायल हो गए। रात में शीर्ष समुदाय और विदेशियों पर हमला हुआ।इस घातक हमले ने भारत और पाकिस्तान के बीच शांति प्रक्रिया में काफी बड़ी बाधा उत्पन्न कर दी थी। उन सभी प्रयासों को नुकसान पहुंचाया, जो दोनों देशों के बीच सामंजस्यपूर्ण संबंधों को प्राप्त करने के लिए किए जा रहे थे। भारतीय अधिकारियों ने पाकिस्तान के आतंकी इरादों के खिलाफ आवाज उठाई और उसे आतंकवाद के उप केंद्र के रूप में देखा। भारत में भारतीय नागरिकों को निशाना बनाने के लिए लश्कर-ए-तैयबा को दोषी ठहराया।इस हिंसक दृष्टिकोण ने दोनों राज्यों के बीच विश्वास की कमी पैदा कर दी, भारत-पाकिस्तान संबंधों के लिए यह सबसे गंभीर समस्या है। मुंबई हमला भारत-पाक के बीच की शांति को खत्म करने का सीधा प्रहार के रूप में साबित हुआ। इस घटना ने दोनों राज्यों के बीच अविश्वास को घातक रूप दिया। इसने आतंकवाद की लहर में उपमहाद्वीप को शामिल किया और पाकिस्तान को आतंकवाद की शक्ति के रूप में बदनाम किया। मुंबई हमलों से विदेशियों को सीधे हमले के कारण अंतरराष्ट्रीय समुदाय से असीम समर्थन मिला। भारतीयों ने भारत के 9/11 के रूप में मुंबई के 26/11 के आतंक का दावा किया और भारतीय मुसलमानों पर अपने स्वयं के फासीवादियों के समूह आतंकवाद की अनदेखी करते हुए आतंकवाद को रोकने के लिए पाकिस्तान पर अनुचित दबाव बनाने का आग्रह किया। बहरहाल, हम मुंबई टेरर एक्ट में पाकिस्तान के गैर-राज्य अभिनेताओं की भागीदारी को भी नजरअंदाज नहीं कर सकते। पाकिस्तान के पास भी अपने आधार हैं जो चरमपंथ को पैदा करते हैं हालांकि आतंकवाद एक पश्चिमी क्षेत्र है जो अब आसन्न सत्ता और अन्य झूठ बोलने वाले राज्यों के लिए लगातार खतरे के रूप में दिखाई देता है।

Malik, A. (2020) [9] ने स्वीकार किया कि हालांकि, विभिन्न अध्ययनों से पता चला है कि दोनों देशों की मीडिया युद्ध और हिंसा द्वारा कश्मीर संघर्ष का कवरेज। वे इस बात को उजागर करते हैं कि कश्मीरी, वास्तविक पार्टी और पीड़ितों को नजरअंदाज किया जाता है, भारत और पाकिस्तान के कुलीन पदों पर अधिक अनुमान लगाया जाता है, केवल संघर्ष के भौतिक पहलुओं की सूचना दी जाती है, समानता की अनदेखी की जाती है और अंत में, शांतिपूर्ण तरीके से हिंसात्मक साधनों को महत्व दिया जाता है विकल्प। यह लगातार शत्रुतापूर्ण वातावरण पर असर डाल सकता है जिसमें कई शांति वार्ता अब तक विफल रही हैं। यदि मीडिया संघर्ष को कवर करने के अपने दृष्टिकोण को बदलता है, तो यह संभावना है कि राजनीतिक और सार्वजनिक बहस भी अनुसरण करती है जो बातचीत के लिए अनुकूल माहौल बना सकती है। चूंकि मीडिया कवरेज सार्वजनिक नीति को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है और लोगों के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाता है, इसलिए यह प्रासंगिक हो जाता है कि मीडिया की सामग्री को अकादमिक जांच में घुसना चाहिए। पाकिस्तान और भारत दोनों में गतिशील मीडिया प्रणालियाँ हैं - विशेष रूप से प्रिंट - और लोगों के दैनिक जीवन में एक बहुत ही आवश्यक स्थान रखती हैं। डेटा स्रोतों के लिए, सात प्रमुख हाल की घटनाएं; बुरहान वानी की हत्या (2016), उरी हमला, भारतीय सर्जिकल स्ट्राइक, पुलवामा हमला, बालाकोट एयरस्ट्राइक, और अभि नंदन का कब्जा और रिलीज (2019) को चुना गया। हर घटना के बारे में प्रत्येक समाचार पत्र से कुल 56 कहानियां, एक लीड स्टोरी और एक संपादकीय एकत्र किया गया। प्रत्येक कहानी का मूल्यांकन गैल्टुंग के 19 संकेतकों के अनुसार किया गया था; नौ युद्ध, नौ शांति और एक तटस्थ, और तदनुसार वर्गीकृत। विश्लेषण से पता चला कि DAWN में सबसे अधिक (46.15%) शांति उन्मुख कवरेज था, जबकि HINDU केवल 23% शांति सामग्री के साथ दूसरे स्थान पर था। युद्ध की श्रेणी में, द नेशन ने सर्वोच्च (100%) स्कोर किया, जबकि टाइम्स ऑफ इंडिया को दूसरा (92.85%) मिला। कोई भी कहानी तटस्थ श्रेणी के लिए योग्य नहीं हो सकती थी। कुल मिलाकर, इन अखबारों का कवरेज (81.13%) युद्ध के उन्मुख पाया गया।

Mittal, D. and Ranjan, A. (2016) [10] के कथन अनुसार मार्च में पाकिस्तानी समाचार पत्रों ने बताया कि कुलभूषण जाधव 6 नाम के एक भारतीय जासूस को बलूचिस्तान से गिरफ्तार किया गया है। यह आरोप लगाया गया था कि वह पाकिस्तान में आतंकवादी गतिविधियों में शामिल था। इसके बाद भारी हंगामा हुआ है। पाकिस्तानी मीडिया, सरकार और सेना इस मामले को सक्रिय रूप से उजागर कर रहे हैं। पाकिस्तानी मीडिया ने संदिग्ध के पासपोर्ट को प्रकाशित किया जिसमें दावा किया गया था कि वह मुंबई से है और उसके पास हुसैन मुबारक पटेल के नाम पर वैध ईरानी वीजा था। उन्होंने आगे दावा किया कि वह 2013 में रॉ में शामिल हुए थे, और ईरान में बंदरगाह चाबहार में स्थित थे, जिसे भारत विकसित करने में मदद कर रहा है। एक वीडियो भी प्रसारित किया गया था। जिसमें यह दावा किया गया है कि जाधव ने खुद एक जासूस होने की बात कबूल की थी। पाकिस्तान के सीनेट ने भी सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव को अपनाया जिसमें सरकार ने देश में "भारतीय हस्तक्षेप" पर एक डोजियर तैयार करने और इसे अन्य देशों और अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों को भेजने के लिए कहा है।

निष्कर्ष:

राजनीतिक बाधाओं के अलावा, आर्थिक चिंताएं भी हैं। शोध पत्र में यह समझाने की कोशिश की गई है कि ट्रस्ट कॉरिडोर के माध्यम से आर्थिक आयात और निर्यात का लाभ सभी संबंधित राष्ट्रों के लिए है। लेकिन इसके खिलाफ, कर्ज के बोझ, घरेलू व्यापार और निर्माण को खोने, पड़ोसी राज्यों की आर्थिक स्थितियों की असमानता, हथियार की बिक्री के क्षेत्र में कमी, और मुक्त आर्थिक उद्घाटन के व्यापक उद्घाटन के कारण कई औद्योगिक निकायों के एकाधिकार व्यवसाय को खोने की भी आशंका है। ज़ोन भी हमेशा इस तरह की पहल को बाधित करने की कोशिश करता है। एक आम भारतीय किसी आम पाकिस्तानी या किसी भी देश के किसी अन्य व्यक्ति का दुश्मन नहीं है। ट्रस्ट रिलेशनशिप निश्चित रूप से इस तरह की ट्रैक दो पहलों की संभावना को बढ़ाएगा और प्रत्येक देश की संस्कृति और लोगों से लोगों के संपर्क को समृद्ध करने के लिए संस्कृति विनिमय भी करेगा। लेकिन अक्सर यह

देखा गया कि स्टेट एक्टर्स द्वारा राजनीतिक एजेंडे से एक आम आदमी की आवाज को दबा दिया जाता है। कभी-कभी राष्ट्रवादी नेता और उनके अनुयायी अपने पावर और वोट बैंक को अक्षुण्ण रखने के लिए पूर्वोक्त राजनीतिक और आर्थिक रूप से खुले संबंध के लिए अवरोध पैदा करते हैं। उन लोगों के अलावा, कुछ विशेष क्षेत्रों पर आतंक और स्वतंत्रता की लड़ाई जैसे युद्ध होते हैं जैसे कश्मीर दो राष्ट्रों के हितों के बीच एक बड़ी दूरी रखता है और इसे कम करने और सामान्य करने के बजाय संघर्ष बढ़ाता है। सामान्यीकरण के माध्यम से इस तरह की बाधाओं पर काबू पाने से गर्म रास्ते का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

संदर्भ सूची

1. Hussain Ejaz. India-Pakistan: Challenges and Opportunities: Journal of Asian Security and International Affairs 2019;6(1):82-95.
2. Flamenbaum S, Neville M. Optimism and Obstacles in India-Pakistan Peace Talks: Peace Brief 2011, 1-5.
3. Naazer MA. SAARC Summit Diplomacy and Its Impact on Indo Pakistan Relations (1985-2014): FWU Journal of Social Sciences 2018;12(1):67-75.
4. Thankachan K, Thomas PE. The Reality of Conflict Frames in The Reality of Con Media: A Comparative Analysis of News Stories in the Hindu and Dawn concerning the Aftermath of Uri Attack: International Journal of Arts, Science and Humanities 2019;7(1):61-70.
5. Ijaz A. Pakistan-India Relations under Prime Minister Modi's Government (2014-16): Journal of Current Affairs 2017;2(1):74-94.
6. Sinha A. Trust relationship: The way of peace between India and Pakistan: International Journal of Peace and Development Studies 2019;10(3):19-24.
7. Khan A, Khan A. From Burhan Wani to Abhi Nandan: A Comparative Analysis of India and Pakistan's Newspaper Coverage of Kashmir Conflict: NUST Journal of International Peace & Stability 2020;3(1):41-58.
8. Javaid U, Kamal M. The Mumbai Terror '2008' and its Impact on the Indo Pak Relations: Journal of South Asian Studies 2013;28(1):25-37.
9. Malik A. Indo-Pak Kashmir Conflict: Chinese Media Framing and Evolving Perspective: Journal of Political Studies 2020;27(1):15-40.
10. Mittal D, Ranjan A. India-Pakistan: Contours of Relationships: Space and Culture 2016;4(1):6-16.